PATIENT SAFETY & QUALITY OF CARE
NABH
CERTIFIED

(Certified under NABH's SHCO Category)
उदयपुर शाखा/ जयपुर शाखा

20+ वर्षो से अधिक का भरोसा

- अत्याधुनिक तकनीकें व उपचार
- उच्चतम सफलता दर
- अब तक सैकड़ों नि:संतान दम्पत्ति लाभान्वित

A unit of NFWCHPL

नीलकण्ठ आई.वी.एफ.

फर्टिलिटी एण्ड टेस्ट ट्यूब बेबी

नि:संतानता व टेस्ट टयूब बेबी केन्द्र

अधिक जानकारी के लिए हमारे
YouTube
चैनल को सब्सक्राईब करें।

SCAN HERE

नीलकण्ठ आई.वी.एफ.

"मातृत्व का सपना करें साकार"

"झीलों की नगरी" उदयपुर में 20 वर्ष पूर्व नीलकंठ आई.वी.एफ. की स्थापना की गई हमारा उद्देश्य और प्राथमिकता है कि प्रदेश के नि:संतान दंपत्ति के लिये उचित मूल्य पर विश्वस्तरीय आई.वी.एफ. तकनीक से उपचार उपलब्ध हो सकें ।

अधिक जानकारी के लिए आप हमारे पेज को फॉलो कर सकते है :

अधिक जानकारी के लिए आप हमारे पेज को फॉलो कर सकते है :

» विशेषज्ञ टीम

हम निःसंतान दम्पतियों के दुःख और उनकी भावनात्मक स्थिति को समझते है । हमारा उद्देश्य है कि प्रत्येक दम्पति सफलतापूर्वक गर्भधारण करें और हर दम्पति को विश्वस्तरीय सुविधाएं कम खर्च में उपलब्ध हों।

हमारा ध्येय है कि निःसंतानता के ईलाज के क्षेत्र में हम अपना सर्वोत्तम प्रयास करे जिसके लिये हम चिकित्सा क्षेत्र में अनुसंधान जारी रखने के लिये प्रतिबद्ध है व हमेशा हम उत्कृष्टता का प्रयास करते रहेंगे । हमारी टीम पूरी कोशिश करेगी कि आपके घर में खुशी की किलकारी गूंजे । यह हमारा वादा है ।

डॉ. आशीष सूद
(साईन्टिफिक डायरेक्टर)

वात्सल्य की आस में आज भारत में 20-25 प्रतिशत दम्पति तरस रहे है । निःसंतानता की समस्या बढ़ने का मुख्य कारण, तनावपूर्ण लाईफस्टाईल, खाद्य पदार्थों में अनियन्त्रित मिलावट व दवाइयों का उपयोग माना जा रहा है। इस वजह से अधिकांश महिलाओं में, कम उम्र में ही माहवारी का बन्द होना, अण्ड उत्सर्ग न होने जैसी समस्या आने लगी हैं व पुरुषों में शुक्राणुओं की कमी देखने को मिल रही है । इस स्थिति को गम्भीरता से देखते हुए आम जन में जागरुकता लाने की आवश्यकता है, जिससे कम उम्र में ही, निःसंतानता विशेषज्ञ की सलाह ले ली जाए तो व्यर्थ ही पैसा व समय बर्बाद न हो ।

निःसंतान्ता के इलाज को चिकित्सकों द्वारा जटिल एवं हव्वा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी । जिसके परिणामस्वरुप, इलाज के लिये परेशान दम्पति इतने हताश हो जाते हैं कि उन्हें किसी भी तरह के इलाज पर भरोसा दिलाना हमारी पहली चुनौती बन जाती हैं । हमारे संस्थान पर उपलब्ध नवीनतम एम्ब्रियो मॉनिट्रींग सिस्टम व मॉडयूलर क्लोज्ड वर्किंग लैब की मदद से आज अधिकांश दम्पति लाभान्वित हो रहे है । यदि टेस्ट ट्यूब बेबी तकनीक, आई.वी.एफ.-इक्सी, भ्रूण बैंक, शुक्राणु बैंक व अण्डदान जैसी, सुविधाओं का भरपूर इस्तेमाल किया जाये तो दुनिया में कोई भी दम्पति संतान का सुख पानें से वंचित नही रहेगा ।

डॉ. सिमी सूद
(डायरेक्टर व वरिष्ठ निःसंतानता विषेशज्ञ)

विशेषज्ञ टीम

डॉ. आशीष सूद
(साईन्टिफिक डायरेक्टर)

डॉ. सिमी सूद
(डायरेक्टर व वरिष्ठ निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. रजनी तँवर
(निःसंतानता एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ)

डॉ. प्रीती पालीवाल (कोटा)
(निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. अल्का बाटला (कोटा)
(निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. प्रियंका यादव (जयपुर)
(निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. आस्था जैन (जयपुर)
(निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. हिया अग्रवाल (जोधपुर)
(निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. उमा प्रकाश चव्हाण (अजमेर)
(निःसंतानता विशेषज्ञ)

डॉ. युक्ति गौड़ (उदयपुर)
(निःसंतानता एवं स्त्री रोग विशेषज्ञ)

डॉ. कपिल शारदा
(लेप्रास्कॉपिक सर्जन)

डॉ. नीलम नीमाड़े
(शिशु रोग विशेषज्ञ)

डॉ. सुनील जांगिड़
(शिशु रोग विशेषज्ञ)

डॉ. दीपक शाह
(निश्चेतना विशेषज्ञ)

डॉ. संतोष ऐलानी (जयपुर)
(निश्चेतना विशेषज्ञ)

डॉ. हरि राम
(रेडियोलॉजी विशेषज्ञ)

भूपेन्द्र सिंह
(सी. एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

राहुल सेन
(सी. एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

मोहित सोमपुरा
(एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

किरण कुशवाहा
(एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

पूजा सिंह
(एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

गायत्री भट्ट
(एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

मंजू सैनी
(एम्ब्रियोलॉजिस्ट)

» आई.वी.एफ. प्रक्रिया में बार-बार विफलता किसे चुनें, कहाँ जाएँ ?

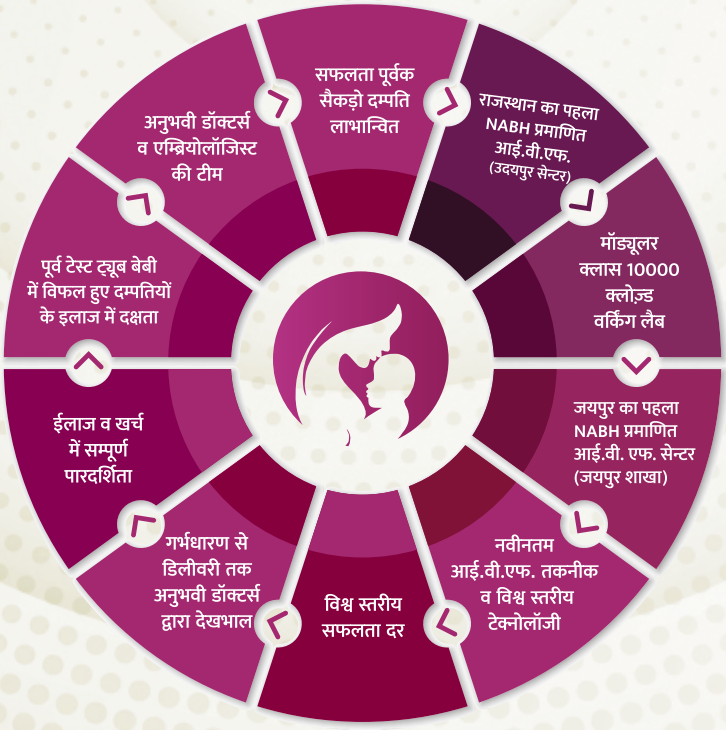

» आई.वी.एफ. असफल होने के पीछे कारण क्या हो सकते हैं?

आईवीएफ प्रक्रिया की सफलता दर विश्व भर में 100 प्रतिशत नहीं है जिसके कारण कुछ दम्पती को आईवीएफ उपचार में निराशा हाथ लगती है। क्या इसका ये मतलब है कि उन दम्पतियों के लिए आगे सारे रास्ते बंद हो गए? कदापि नहीं ! आइवीएफ प्रक्रिया की सफलता दर काफी पैमानों पर निर्भर करती है और उनमें से सबसे पहला और अहम है आईवीएफ सेन्टर का चुनाव क्योंकि हर आईवीएफ सेन्टर की सफलता दर एक जैसी नहीं होती। आईवीएफ की सफलता दर पत्नी के अण्डे, पुरूष के शुक्राणु और उनसे बने भ्रूण की गुणवत्ता पर भी निर्भर करती है। गर्भाशय व उसके अंदर की परत एंडोमेट्रियम का भी अच्छा व स्वस्थ होना आवश्यक है क्योंकि भ्रूण को उसी परत पर चिपकना होता है। आईवीएफ की सफलता फर्टिलिटी डॉक्टर की कुशलता पर भी निर्भर करती है, क्योंकि किस दम्पती के लिए कौनसी आईवीएफ प्रक्रिया का चयन करना है और उस प्रक्रिया को कैसे कुशलतापूर्ण निभाना है वह भी डॉक्टर पर निर्भर करता है। एम्ब्रियोलॉजी लैब जहां भ्रूण का निर्माण होता है तथा भ्रूण वैज्ञानिक जो अण्डे व शुक्राणु को मिलाने में मदद करता है अथवा इनक्यूबेटर जिसमें भ्रूण का विकास होता है यह सब भी आईवीएफ की प्रक्रिया में अहम भूमिका निभाते हैं। एक अच्छी एम्ब्रियोलॉजी लैब जो अत्याधुनिक उपकरणों से लैस हो व एक कुशल भ्रूण वैज्ञानिक की देखरेख में संचालित हो इस पर भी कई हद तक आईवीएफ की सफलता निर्भर करती है। किसी भी दम्पती को आईवीएफ सेन्टर का चुनाव बहुत सोच समझकर करना चाहिए क्योंकि जहां ज्यादा सुविधाएं हैं वहां ज्यादा संभावनाएं हैं।

» नीलकण्ठ ही क्यों चुनें ?

हमारे संस्थान में गर्भधारण से लेकर डिलीवरी तक की सम्पूर्ण देखभाल अति उत्तम वातावरण में की जाती है। टेस्ट ट्यूब बेबी ईलाज द्वारा गर्भधारण की गई महिला को विशेष देखभाल की जरूरत होती है, जो कि अनुभवी निःसंतानता विशेषज्ञ की देखरेख में होनी चाहिए। इससे गर्भपात के प्रतिशत को काफी कम किया जा सकता है। हमारे संस्थान में गर्भवती महिला की देखभाल निःसंतानता विशेषज्ञ, स्त्री व प्रसुति रोग विशेषज्ञ, शिशु रोग विशेषज्ञ द्वारा किया जाता है जो किसी भी आपातकालीन स्थिति में निपटने में सक्षम है। टेस्ट ट्यूब बेबी ईलाज में भ्रूण विशेषज्ञ (एम्ब्रियोलॉजिस्ट) का सफलता की दर में विशेष महत्व होता है। हमारे संस्थान में अनुभवी एम्ब्रियोलॉजिस्ट 24X7 उपलब्ध रहते हैं। ये संस्थान अन्तर्राष्ट्रीय मानकों के दिशा निर्देशों के अनुसार बनाया गया है।

पुरूष निःसंतानता

पुरुष निःसंतानता के कारण आमतौर पर नहीं पहचाने जाते है। फिर भी कुछ ऐसी समस्याएं है, जिन्हें संभावित कारणों के तौर पर लिया जाता है, जो संभावित कारणों की ओर इशारा कर सकती है। जैसे-

1. शुक्राणुओं की उत्पत्ति दोष
2. पुरूषों के प्रजनन अंगों की संरचना में दोष
3. Premature Ejaculation (शीघ्रपतन)
4. Ejaculatory Dysfunction (प्रतिगामी स्खलन)
5. Desire Problems / Low Libido (Sex के प्रति अरुचि)
6. प्रतिरोधक क्षमता में कमी
7. अनुवांशिक दोष
8. इंजेक्शन व वृषण में होने वाले आघात
9. हार्मोन संबंधित विकार
10. रेडियेशन के संपर्क में आना या पूर्व में गलत तरीके से किए गये उपचार

उपलब्ध उपचार

IVF ICSI (आई.वी.एफ–इक्सी)

Intra Cytoplasmic Sperm Injection

यह तकनीक उन निःसंतान दम्पतियों के लिए उपयोगी है, जिन पुरूषों के वीर्य में शुक्राणुओं की मात्रा कम या कमजोर होते हैं। इस प्रक्रिया में एक परिपक्व शुक्राणु का चयन कर एक अण्डाणु में सुई द्वारा निषेचन करा कर भ्रूण तैयार किया जाता है।

» IMSI-RI-UK (इम्सी)

Intracytoplasmic Morphologically Selected Sperm Injection

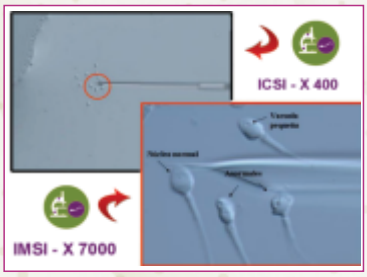

यह तकनीक शुक्राणुओं को अधिक विस्तार से जांचने में सहायक है। इस तकनीक द्वारा शुक्राणुओं की संरचना को हाई पावर माइक्रोस्कोप की मदद से 7000 गुना बड़ा कर के अध्ययन किया जाता है। यह ICSI का एक उनन्त संस्करण है व इस पद्धति के उपयोग से हम ICSI द्वारा सफलता की दर को बढ़ा सकते हैं एवं गर्भपात की दर में कमी लाई जा सकती हैं।

» O.S.V. (ऊसाईट - स्पिंडल व्यू)

Oosight Spindle View

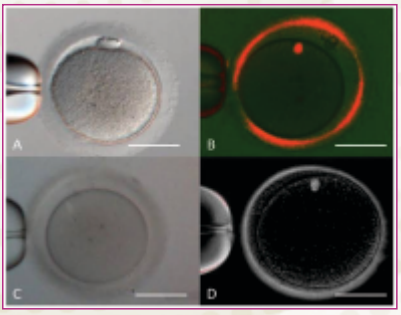

इस तकनीक में इक्सी के दौरान जब शुक्राणु को अण्डे में प्रवेश कराया जाता है, तो ध्रुवीकृत प्रकाश की मदद से अण्डे की आनुवांशिक सामग्री (Spindle Fibre) के लोकेशन का पता कर, प्रवेश कराने की जगह को निर्धारित किया जाता है। जिससे इक्सी Needle से Spindle Fibre को Damage होने से बचाया जा सके। परिपक्व व स्वस्थ भ्रूण का निर्माण किया जा सके एवं इक्सी की सफलता दर को बढ़ाया जा सके।

PESA (पीसा) Percutaneous Epididymal Sperm Aspiration

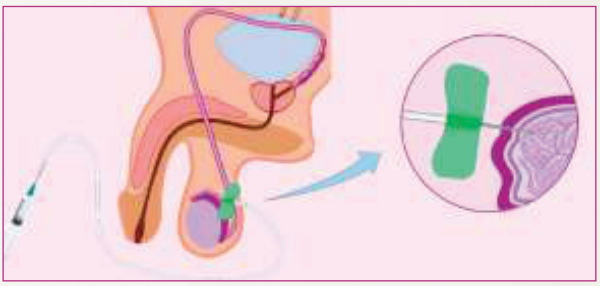

यह प्रक्रिया उन मरीजों के लिये उपयोगी है जिन्होंने पूर्व में नसबन्दी करवा रखी हो या किसी अन्य कारण से शुक्राणु के निर्माण में रूकावट उत्पन्न हो रही हो। इस प्रक्रिया में सुई को अधिवृषण (Epididymis) में प्रवेश करवा कर उनमें से शुक्राणु प्राप्त किये जाते है फिर इन्हे अण्डों के साथ निषेचित कर स्त्री के गर्भाशय में स्थापित करते है।

TESA (टीसा) Testicular Sperm Aspiration/ TESE (टीसी) Testicular Sperm Extraction

यह प्रक्रिया उन पुरूषों में उपयोगी होती है जिनके वीर्य की जाँच में निल शुक्राणु होते हैं।

इसमें अण्डकोष या वृषण से सुई की सहायता से तरल पदार्थ लिया जाता अथवा अण्डकोष से एक छोटा सा टुकड़ा (बायोप्सी) लिया जाता है और उनमें से शुक्राणु प्राप्त कर अण्डे के साथ निषेचन कराया जाता है।

IUI (कृत्रिम गर्भाधान) Intra Uterine Insemination

जिन दम्पतियों में गर्भ पुरूष के कारण नहीं ठहर रहा हो, उनमें इस तकनीक द्वारा अच्छे व गतिशील शुक्राणुओं को Sperm Washing तकनीक के द्वारा अलग कर गर्भाशय में डालते हैं इसे कृत्रिम गर्भाधान या IUI कहते हैं। ये दोनों प्रकार से हो सकती है। पति के वीर्य के द्वारा (Husband Sperm) व शुक्राणु बैंक द्वारा (Donor Sperm) ।

Sperm Bank (स्पर्म बैंक)

नसबंदी करने से पूर्व या किसी गम्भीर बीमारी जैसे कैंसर के ईलाज से पूर्व शुक्राणु बैंक में शुक्राणु को सुरक्षित रख सकते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर आपके काम आ सके। इस तकनीक द्वारा शुक्राणु को Liquid नाइट्रोजन (-196°C) में कई वर्षों तक फ्रीज करके सुरक्षित रखा जा सकता है।

कमजोरी या अधिक उम्र के कारण ऐसे कई व्यक्ति है जो समय पर शुक्राणु नही दे पाते हैं, ऐसे व्यक्ति भी बैंक में अपने शुक्राणु सुरक्षित करा सकते हैं ताकि जरूरत पड़ने पर उनके फ्रीज़ किए हुए शुक्राणु काम आ सके। जिन व्यक्तियों के वीर्य में शुक्राणु बिलकुल नही है तथा ईलाज कराने के बाद भी कोई फायदा नहीं हुआ है, ऐसे व्यक्ति बैंक से शुक्राणु ले सकते हैं।

महिला निःसंतानता

महिलाओं में निःसंतानता के मुख्य कारण

1. वह महिलाएं जिनकी उम्र अधिक हो गई हो और माहवारी बंद हो गई हो।
2. वह महिलाएं जिनमें अण्डे बनते हैं लेकिन आगे विकसित नहीं होते या समय पर नहीं फूटते। (पॉली सिस्टिक ओवेरी, PCOD)
3. वह महिलाएं जिनकी ट्यूब (नलीयां) बंद हो या अन्य कोई खराबी हो गई हो।
4. अनियमित मासिक धर्म होना व अण्डों का कम बनना।
5. गर्भाशय में विकार, जैसे कि गठान (Fibroid), बच्चेदानी में झिल्ली (Septum), बच्चेदानी दो भागों में विभाजित (Bicornuate Uterus)।
6. टी.बी. के कारण गर्भाशय कि झिल्ली का खराब होना।
7. जिन महिलाओं में आरम्भ से ही महावारी नही आई हो।
8. निरन्तर स्वतः गर्भपात।

उपलब्ध उपचार

डायग्नोस्टिक व ऑपरेटिव लेप्रोस्कोपी

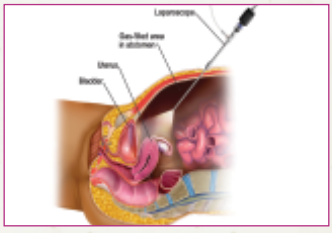

- दूरबीन द्वारा नलीयों की जाँच
- बंद ट्यूब खोलने का ऑपरेशन
- दूरबीन द्वारा आवेरियन ड्रिलिंग
- एण्ड्रोमेट्रियोसिस की बीमारी का ईलाज
- अण्डेदानी की गांठ
- गर्भाशय में बड़ी से बड़ी गांठ का दूरबीन द्वारा ऑपरेशन।

डायग्नोस्टिक व ऑपरेटिव हिस्ट्रोस्कोपी

- गर्भाशय में पर्दा/मध्य में दिवार का ऑपरेशन।
- गर्भाशय की गठान का दूरबीन द्वारा ऑपरेशन।
- गर्भाशय की परत का खराब होना या सिकुड़ जाना।

IVF आई.वी.एफ. (In Vitro Fertilization)

इसे टेस्ट ट्यूब बेबी तकनीक भी कहा जाता है। इस पद्धति में अण्डे और शुक्राणु का निषेचन शरीर के बाहर किया जाता है। भ्रूण का विकास 3 से 5 दिन तक शरीर के बाहर गर्भाशय जैसे वातावरण में किया जाता है। बाद में विकसित हुए भ्रूण में से अच्छे भ्रूण को गर्भाशय में स्थापित किया जाता है। पहली बार ये प्रक्रिया टेस्ट ट्यूब में की गई थी, इसलिए इस पद्धति को टेस्ट ट्यूब बेबी पद्धति कहते हैं।

टेस्ट ट्यूब बेबी की विशेषताएँ - अण्डे व शुक्राणुओं की गुणवत्ता के बारे में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। निषेचन हुआ या नहीं एवं भ्रूण कितने है उसकी जानकारी प्राप्त हो सकती है। भ्रूण को उसके उचित स्थान पर स्थापित किया जा सकता है। यदि अतिरिक्त भ्रूण बने तो, उन्हें भ्रूण बैंक में सुरक्षित भी रखा जा सकता है।

ब्लास्टोसिस्ट कल्चर तकनीक

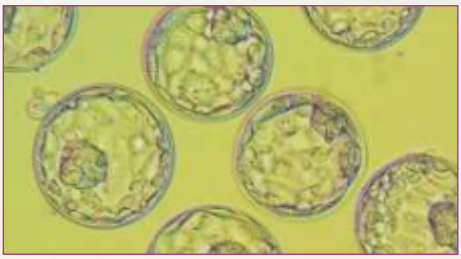

ब्लास्टोसिस्ट प्रक्रिया 5वें दिन तक भ्रूण विकसित करने की तकनीक है। ब्लास्टोसिस्ट कल्चर का उपयोग उन दम्पति के लिए उपयोगी है जिनके टेस्ट ट्यूब बेबी ईलाज के 2 से अधिक IVF उपचार में असफलता प्राप्त हुई हो।

लेज़र असिस्टेड हैचिंग

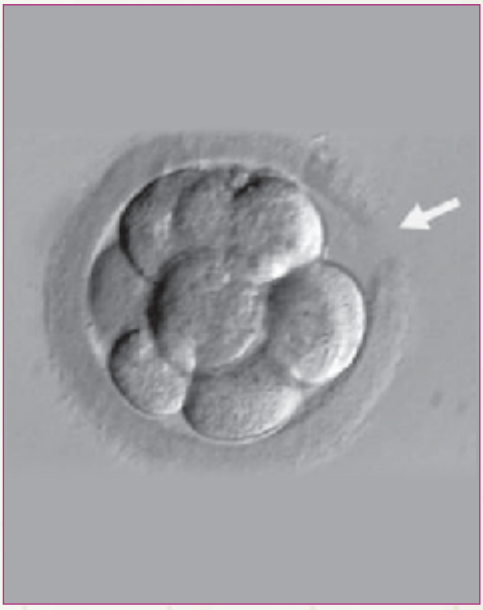

वह दम्पत्ति जिनके IVF/ICSI असफल हो चुके हैं उनमें इस तकनीक द्वारा सफलता की सम्भावना को बढ़ाया जा सकता है। इस तकनीक में भ्रूण की बाहरी परत को लेज़र की सहायता से हैच किया जाता है। ताकि गर्भ के ठहरने की सम्भावना बढ़ सके। यह सख्त ज़ोना पेलुसीडा के एक हिस्से को कमज़ोर करने का एक सौम्य और सुरक्षित तरीका है। यह नवीनतम तकनीक हमारे सेन्टर पर उपलब्ध है।

विट्रिफिकेशन

प्रायः PCOD से ग्रस्त महिलाओं व कम उम्र की युवतियाँ जिनमें IVF तकनीक के अन्तर्गत अनेकों भ्रूण का निर्माण हो जाता है। विट्रिफिकेशन तकनीक द्वारा अतिरिक्त भ्रूणों को (-196°C) डिग्री सेल्सियस पर कई वर्षों के लिये सुरक्षित रखा जा सकता है। इसकी मदद से मरीज को बार बार अण्डे बनाने की कठिन प्रक्रिया से नहीं गुज़रना पड़ता व विट्रिफाई करे गए भ्रूणों का इस्तेमाल आगे होने वाले उपचार मे किया जा सकता है।

भ्रूण बैंक

इसमें भ्रूण को एकत्रित करके Liquid Nitrogen (-196°C) में सुरक्षित रखते हैं। जिसमें IVF उपचार के दौरान बने भ्रूणों को भ्रूण बैंक में कई वर्षों के लिये सुरक्षित रखा जा सकता है।

PRP Therapy क्या है ?

इसमें मरीज के शरीर से रक्त निकाल कर उसमें से प्लेटलेटस रिच पदार्थ अलग किया जाता है। फिर उसे IVF चक्र के दौरान भ्रूण स्थानान्तरण से पहले गर्भाशय में डाला जाता है।

गर्भाशय के किन विकारों में PRP उपयोगी है?

- जिनकी गर्भाशय की परत टी.बी. या अन्य संक्रमण से खराब हो गई है।
- जिनकी गर्भाशय की परत चिपक गई है।
- दवाईयां लेने के बावजूद जिनकी झिल्ली की मोटाई 5 एमएम से कम रहती है।
- जिन मरीजों के बार बार आईवीएफ विफल हो रहा है।
- जिन मरीजों में माहवारी बंद हुये 10 साल से ज्यादा हो चुके हैं।
- जिन मरीजों को सरोगेसी की सलाह दी गई है।

अत्याधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय उपकरणों से सुसज्जित मॉडयूलर क्लोज्ड वर्किंग लैब

भारत की सर्वोत्तम लैब में से एक

ZAND AIR PCOC-3 (भारत में प्रथम) (Photocatalytic Oxidation Chamber)

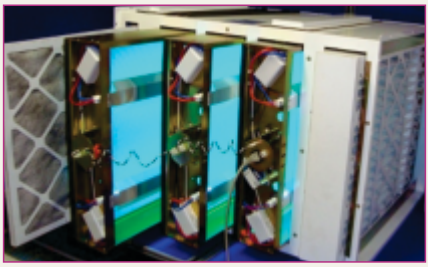

फोटो - कैटेलिटिक ऑक्सीडाइजिंग तकनीक द्वारा हवा में उपलब्ध VOC गंधको, धुएं और विषाक्त रसायनो को बेअसर कर देता है। टेस्ट ट्युब बेबी की सफलता लैब की हवा व वातावरण की शुद्धता पर निर्भर करता है। PCOC-3 टेस्ट ट्युब बेबी लैब की हवा को शुद्ध कर भ्रूण के विकास के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करता है जिससे सफलता की दर बढ जाती है।

मॉड्यूलर क्लोज्ड वर्किंग लैब क्लास - 10000

हमारे संस्थान की क्लोज्ड वर्किंग मॉड्यूलर लैब अंतर्राष्ट्रीय व यूरोपियन मानकों के अनुसार बनाई गई है। इस लैब में टेस्ट ट्यूब बेबी पद्धति द्वारा सफलता की दर अन्य लैब की तुलना में काफी अधिक रहती है। इसमें तैयार किये गये भ्रूण को वही वातावरण उपलब्ध होता है जो कि पूर्णतया उसके विकास के लिये अनुकूल होता है।

सामान्यतः मरीज को टेस्ट ट्यूब बेबी प्रक्रिया को 3-4 बार करने की आवश्यकता पड़ सकती है परन्तु क्लोज्ड वर्किंग मॉड्यूलर लैब की मदद से प्रथम चक्र में ही गर्भधारण करने की प्रबल संभावना रहती है। हमारे संस्थान की सफलता की दर अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के समान है। जिसके फलस्वरूप यहाँ पर यू.एस.ए., आस्ट्रेलिया, कुवेत, थाईलैण्ड, दुबई, नेपाल व अन्य देशों से कई दम्पति ईलाज द्वारा लाभान्वित हो रहे हैं।

टाईम लैप्स एम्ब्रियो मॉनिटरिंग सिस्टम

टाईम लैप्स एम्ब्रियो मॉनिटरिंग सिस्टम द्वारा निःसंतानता विशेषज्ञ को भ्रूण के विकास की जानकारी सिस्टम में लगे माईक्रो कैमरों द्वारा हो जाती है। इस तकनीक से मशीन में लगे कैमरों द्वारा भ्रूण पर 24 घंटे निगरानी रखी जाती है, और स्वस्थ व सर्वोत्तम भ्रूण का चयन कर गर्भाशय में स्थापित किया जाता है। निःसंतान दम्पति जो पहले भी असफल रह चुके है, वह एम्ब्रियो मॉनिटरिंग सिस्टम व अनुभवी डॉक्टर्स की टीम द्वारा कम खर्च में संतान सुख प्राप्त कर सकते हैं।

विशेषताएँ

1. इसमें एम्ब्रियोलॉजिस्ट द्वारा भ्रूण पर 24 घंटे निगरानी की जाती है।
2. इस तकनीक में माइक्रो कैमरे द्वारा हर भ्रूण का 20 मिनट के अन्तराल में फोटो लिया जाता है जिसके भ्रूण के विकास की सही जानकारी प्राप्त हो जाती है।
3. अधिक एम्ब्रियो बनने पर उनमें से सर्वोत्तम भ्रूण का चयन कर उसे गर्भाशय में प्रतिस्थापित किया जाता है।
4. सामान्य आँखों से देखने पर भ्रूण की शारीरिक संरचना उसकी वृद्धि का पता नहीं चल पाता जो कि एम्ब्रियो मॉनिटरिंग सिस्टम द्वारा संभव है।
5. इसमें भ्रूण को वही वातावरण उपलब्ध होता है जो उसके विकास के लिए अनुकूल है।

उपलब्धियाँ

- अब तक निः संतानता के उपचार के बाद सैकड़ों बच्चों का जन्म।
- दक्षिण राजस्थान का प्रथम टेस्ट ट्यूब बेबी देने वाला संस्थान।
- दक्षिण राजस्थान में एम्ब्रियो बैंक द्वारा प्रथम बच्चे का जन्म।
- दक्षिण राजस्थान का प्रथम विट्रिफिकेशन द्वारा टेस्ट ट्यूब बेबी।
- इन विट्रो मेच्यूरेशन पद्वति द्वारा दक्षिण राजस्थान में प्रथम बच्चे का जन्म।
- सबसे ज्यादा IVF प्रेग्नेन्सी देने वाला दक्षिण राजस्थान का संस्थान।
- अब तक सैकड़ों लेप्रोस्कोपी व हिस्ट्रोस्कोपी द्वारा निः संतानता की समस्या का निदान।
- राजस्थान का पहला NABH प्रमाणित IVF सेन्टर (उदयपुर शाखा)

2013 में नीलकण्ठ हॉस्पिटल ने IVF तकनीक से जन्में बच्चों के साथ स्थापना दिवस मनाया।

25 July विश्व IVF दिवस पर नीलकण्ठ द्वारा ईलाज से जन्में भारत के सभी प्रदेशों से आए टेस्ट ट्यूब बच्चे।

MY FM EXCELLENCE AWARD 2019

HEALTHCARE ACHIEVER'S AWARD 2019

BLINTON PARIVAR

TABLINTON PARIVAR
Warmly Welcomes - Hon'ble Speaker Lok Sabha
Sh. Om Birla
for Unveiling Ceremony of

आपके निःसंतानता से सम्बन्धित कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न

(उत्तर जानने के लिए QR Code स्कैन करें)

1. गर्भधारण नहीं हो रहा है तो कोनसे चेकअप कराये ?
2. कपल्स को इनफर्टिलिटी विशेषज्ञ से सलाह कब लेनी चाइये ?
3. नि: संतानता के लिए क्या-क्या उपचार उपलब्ध है ?
4. क्या होते हे पुरुष नि: संतानता के कारण ?
5. पुरुष नि: संतानता की जांच और उसका इलाज ?
6. पुरुषों में स्पर्म काउंट कम होने के कारण ?
7. पिता बनने के लिए कितने शुक्राणु होने चाइये ?
8. क्या वीर्य में निल शुक्राणु होने पर भी खुद के शुक्राणु द्वारा पिता बना जा सकता हे क्या ?
9. आई वी सेंटर का चुनाव कैसे करे ?
10. क्या पीरियड बंद होने के बाद भी प्रेग्नेंसी संभव है ?
11. आईवीएफ की सफलता किन-किन बातो पर निर्भर करती है ?

12. आईवीएफ की सफलता (IVF Success Rate) को कैसे बढ़ाया जाता है ?

13. I.V.F की सफलता दर कितनी है ?

14.आईवीएफ कैसे होता है ? आईवीएफ की पूरी प्रक्रिया क्या है ?

15.आई वी एफ में कितना खर्च आता है ?

16. किन महिलाओ के लेजर-असिस्टेड हैचिंग फायदेफंद है ?

17. क्या महिलाओं की उम्र बढ़ने के साथ फर्टिलिटी (Fertility) पर असर पड़ता है ?

18. ब्लास्टोसिस्ट कल्चर क्या होता है ?

19. क्या टी बी होने पर भी बच्चा होना संभव है ?

20. कैंसर के बाद माँ कैसे बने ?

21. महिला को AMH टेस्ट कब करवाना चाइये ?

22. क्या नसबंदी के बाद भी प्रेग्नेंसी हो सकती है ?

केन्द्र पर पहली बार कब संपर्क करें ?

- प्रथम उपस्थिति पर आप माहवारी के किसी भी दिन आ सकते है। कृपया पति एवं पत्नी दोनो के अधार कार्ड (Aadhar Card) की फॉटोकॉपी (Xerox) साथ में जरूर लाएं।
- आप रविवार के अलावा किसी भी दिन आ सकते हैं।
- पति एवं पत्नी को पहली बार प्रातः 09:00 से सांय 04:00 बजे केन्द्र पर परामर्श के लिए उपस्थित होना है।
- (सभी जाँचों की रिपोर्ट आने के पश्चात) आपको आपकी समस्या तथा उसके वैज्ञानिक तरीके से निवारण के बारे में परामर्श दिया जाएगा।
- दूसरी बार केन्द्र पर कब उपस्थिति होना है तथा कितने दिन रूकना पड़ेगा इसकी जानकारी भी दी जायगी।
- अपने पुराने ईलाज की सभी रिपोर्ट अवश्य लाए। इन्हें विस्तृत तरह से हमारे चिकित्सक पढ़ने के उपरांत ही जो जाँचे आवश्यक होगी वह पुनः करवाऐंगे।

अधिक जानकारी के लिए हमारे

YouTube

चैनल को सब्सक्राईब करें।

SCAN HERE

उदयपुर

ICICI Bank

नीलकंठ फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर हॉस्पिटल प्रा. लि.

खाता संख्या : 694005601702

ब्राँच : भुवाणा, उदयपुर

आई.एफ.एस.सी: ICIC0006940

जयपुर

ICICI Bank

नीलकंठ फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर हॉस्पिटल प्रा. लि.

खाता संख्या: 694005602124

ब्राँच : भुवाणा, उदयपुर

आई.एफ.एस.सी: ICIC0006940

जोधपुर

ICICI Bank

नीलकंठ फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर हॉस्पिटल प्रा. लि.

खाता संख्या: 694005602554

ब्राँच : भुवाणा, उदयपुर

आई.एफ.एस.सी: ICIC0006940

कोटा

ICICI Bank

नीलकंठ इनफर्टिलिटी सेन्टर

खाता संख्या : 694005500323

ब्राँच : भुवाणा, उदयपुर

आई.एफ.एस.सी: ICICI0006940

अजमेर

ICICI Bank

नीलकंठ फर्टिलिटी एण्ड वुमन केयर हॉस्पिटल प्रा. लि.

खाता संख्या: 694005602426

ब्राँच : भुवाणा, उदयपुर

आई.एफ.एस.सी: ICIC0006940

SUCCESS STORIES

नीलकण्ठ आई.वी.एफ.

फर्टिलिटी एण्ड टेस्ट ट्यूब बेबी

यूनिट ऑफ़ नीलकण्ठ फर्टिलिटी एंड वुमन केयर हॉस्पिटल प्राइवेट लिमिटेड

नए मरीज अपॉईन्टमेन्ट हेतु सम्पर्क करें

09636328777, 09024219144, 06350613796 टोल फ्री: 18008896477

उदयपुर (NABH प्रमाणित)
10-11, डॉक्टर्स लेन, विद्युत विभाग के पास, सेलिब्रेशन मॉल के पीछे, भुवाणा, उदयपुर - 313001, राजस्थान • **संपर्क:** +91 9057155155

नि:संतानता को समर्पित राजस्थान का पहला NABH प्रमाणित आई.वी.एफ. सेंटर

जयपुर (NABH प्रमाणित)
प्लॉट नं. 196 गिरनार कॉलोनी, विशाल मेगामार्ट के सामने, गाँधी पथ, वैशाली नगर, जयपुर - 302021, राजस्थान • **संपर्क:** +91 9509936375

नि:संतानता को समर्पित जयपुर का पहला NABH प्रमाणित आई.वी.एफ. सेंटर

जोधपुर
प्लॉट नं. 21, श्याम नगर, हाऊसिंग बोर्ड रोड़, पाल लिंक रोड़, देव नगर सर्कल के पास, जोधपुर - 342008, राजस्थान • **संपर्क:** +91 9251687241

कोटा
1 टी 19, डॉ. बत्रा क्लीनिक के सामने, विज्ञान नगर डिसपेन्सरी के पास, विज्ञान नगर, कोटा - 324005, राजस्थान • **संपर्क:** +91 7357008555

अजमेर
110/3 A, गोखले मार्ग, सिविल लाइन्स, अजमेर - 305001 राजस्थान • **संपर्क:** +91 9251687245

ईमेल: neelkanthpt.queries@gmail.com • **वेब:** www.neelkanthivfcentre.com

www.fb.com/NeelkanthFertilityHospital www.instagram.com/NeelkanthFertilityHospital

www.youtube.com/neelkanthfertilitycenter

भ्रूण लिंग परीक्षण करवाना एक जघन्य अपराध है तथा इसकी शिकायत 104 टोल फ्री पर की जा सकती है